व्याख्या

Hindi Honours.

चाणक्य :- "ब्राह्मण न किसी के राज्य में रहता है और न किसी के अन्न से पलता है, स्वाधीन में विचरता है और अमृत होकर जीता है। यह तुम्हारा मिथ्या गर्व है। ब्राह्मण सब कुछ सामर्थ्य रखने पर भी, स्वेच्छा से इन माया-स्तूपों को ठुकरा देता है, प्रकृति के कल्याण के लिए अपने ज्ञान का दान देता है"।

अलका :- "देखती हूँ कि प्रायः मनुष्य दूसरों को अपने मार्ग पर चलने के लिए रुक जाता है और अपना चलना बन्द कर देता है"।

सिंहरण

सिंहरण :- मानव कब दानव से भी दुर्दान्त, (दुर्दन्त) पशु से भी बर्बर और पत्थर से भी कठोर-करुणा के लिए निरवकाश हृदयवाला हो जायगा, नहीं जाना जा सकता। अतीत के सुखों के लिए सोच क्यों, अनागत भविष्य के लिए भय क्यों और वर्तमान को तो अपने अनुकूल बना ही लूँगा, फिर चिंता किस की।"

चाणक्य :- धर्म के नियामक ब्राह्मण हैं मुझे पात्र देखकर उसका संस्कार करने का अधिकार है।

Scanned with CamScanner

दाण्ड्यायन – " पवन का एक क्षण विश्राम नहीं लेता, सिन्धु की जलधारा बही जा रही है बादलों में नीचे पक्षियों का झुण्ड उड़ा जा रहा है प्रत्येक परमाणु न जाने किस आकर्षण में खिंचे चले जा रहे हैं जैसे काल अनेक रूपों में चल रहा है" ।

दाण्ड्यायन – " भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभासमात्र हो जाता है, उसको ये नश्वर चमकीले प्रदर्शन नहीं अभिभूत कर सकते - दूत ! वह किसी बलवान की इच्छा का कीड़ा - कंदुक नहीं बन सकता" ।

दाण्ड्यायन – " जिस वस्तु को मनुष्य दे नहीं सकता, उसे ले लेने की स्पर्धा से बढ़कर दूसरा दम्भ नहीं

" " मंगलमय विभु अनेक अमंगलों में कौन-कौन कल्याण छिपाये रखता है हम सब उसे नहीं समझ सकते ।

" " विजय - तृष्णा का अंत पराभव में होता है अलक्षेन्द्र ! राजसत्ता सुव्यवस्था से बढ़े तो बढ़ सकती है, केवल विजयों से नहीं ! इसलिए अपनी प्रजा के कल्याण में लगो" "

बलराम कुमार